



a

23 Jan 2026

10:28 AM

Dehradun

Model: Web-MyKundli

Order No: 121168401

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 23/01/2026  
दिन \_\_\_\_\_: शुक्रवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 10:28:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 08:06:44 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Dehradun  
राज्य \_\_\_\_\_: Uttarakhand  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 30:19:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 78:03:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:17:48 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 10:10:12 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:11:47 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 18:20:24 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:13:18 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:46:17 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:32:59 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शिशिर  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 08:58:02 मकर  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 13:12:44 मीन

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मीन - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मीन - गुरु  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पू०भाद्रपद - 4  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: गुरु  
योग \_\_\_\_\_: परिघ  
करण \_\_\_\_\_: बव  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: सिंह  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: विप्र  
वश्य \_\_\_\_\_: जलचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: सर्प  
युँजा \_\_\_\_\_: अन्त्य  
हंसक \_\_\_\_\_: जल  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: दी-दीपांकर  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: स्वर्ण - लौह  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: कुम्भ

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	माघ	3
पंजाबी	संवत : 2082	माघ	10
बंगाली	सन् : 1432	माघ	9
तमिल	संवत : 2082	थई	10
केरल	कोल्लम : 1201	मकरम	9
नेपाली	संवत : 2082	माघ	10
चैत्रादि	संवत : 2082	माघ	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2082	माघ	शुक्ल 5

### पंचांग

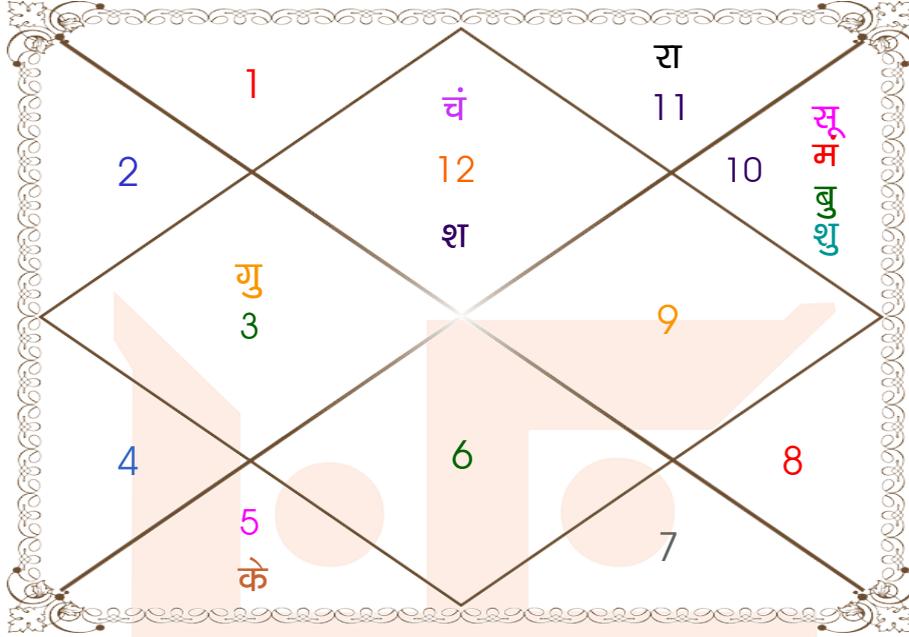
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 5  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 25:46:15  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 5  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : पू०भाद्रपद  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:32:52 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पू०भाद्रपद  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : परिघ  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 15:58:48 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : परिघ  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:10:22 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : बव  
भयात \_\_\_\_\_ : 50:02:49  
भभोग \_\_\_\_\_ : 60:14:59  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : गुरु 2 वर्ष 8 मा 22 दि

### घात चक्र

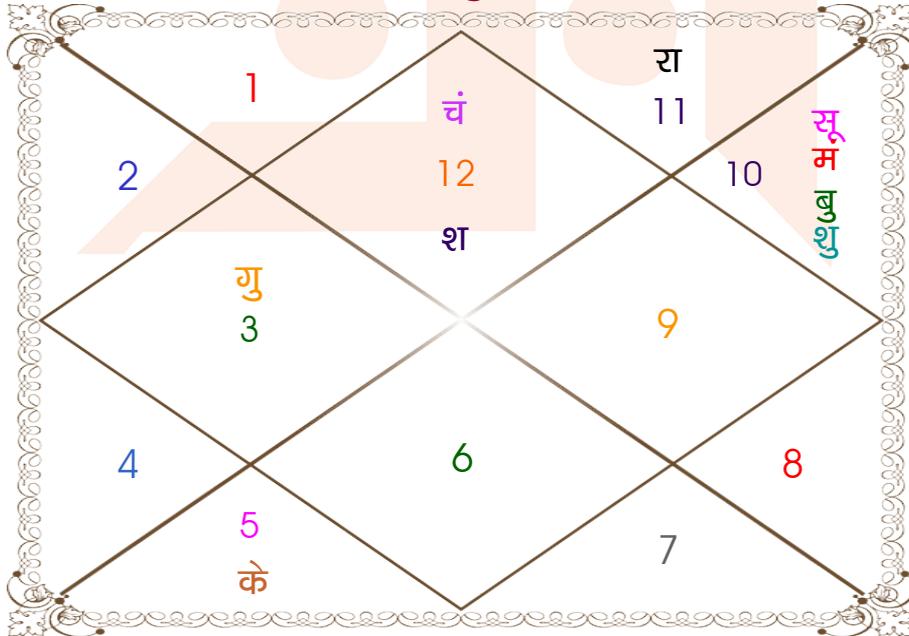
मास \_\_\_\_\_ : फाल्गुन  
तिथि \_\_\_\_\_ : 5-10-15  
दिन \_\_\_\_\_ : शुक्रवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : आश्लेषा  
योग \_\_\_\_\_ : वज्र  
करण \_\_\_\_\_ : चतुष्पाद  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
वर्ग \_\_\_\_\_ : गरुड़  
लग्न \_\_\_\_\_ : सिंह  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मिथुन  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
मंगल \_\_\_\_\_ : कर्क  
बुध \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
गुरु \_\_\_\_\_ : सिंह  
शुक्र \_\_\_\_\_ : कन्या  
शनि \_\_\_\_\_ : वृष  
राहु \_\_\_\_\_ : तुला

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

श ल चं		गु
रा		
शु म सू बु		के

## लग्न कुंडली

	चं ल	श रा
गु		
	मं शु	सू बु
के		

विंशोत्तरी  
गुरु 2वर्ष 8मा 22दि  
गुरु

23/01/2026

16/10/2132

गुरु	15/10/2028
शनि	16/10/2047
बुध	15/10/2064
केतु	16/10/2071
शुक्र	16/10/2091
सूर्य	15/10/2097
चन्द्र	17/10/2107
मंगल	17/10/2114
राहु	16/10/2132

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 8मा 5दि  
भ्रामरी

23/01/2026

29/09/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	23/01/2026
संकटा	28/01/2026
मंगला	10/03/2026
पिंगला	30/05/2026
धान्या	29/09/2026

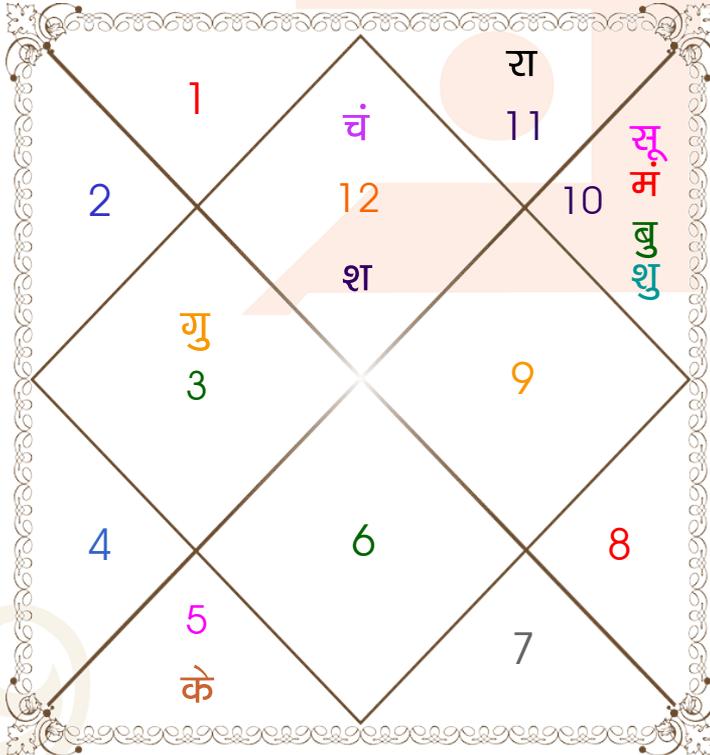
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	13:12:44	524:17:52	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	राहु	---
सूर्य			मक	08:58:02	01:01:03	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			मीन	01:03:38	13:20:52	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	मंगल	सम राशि
मंगल	अ		मक	05:38:14	00:46:45	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	उच्च राशि
बुध	अ		मक	10:00:15	01:41:41	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	सम राशि
गुरु	व		मिथु	24:11:17	00:07:35	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र	अ		मक	12:54:48	01:15:24	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	मित्र राशि
शनि			मीन	03:35:35	00:05:20	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
राहु			कुंभ	15:08:14	00:01:23	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	मित्र राशि
केतु			सिंह	15:08:14	00:01:23	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	03:17:54	00:00:37	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	05:41:25	00:01:26	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो			मक	09:11:34	00:01:55	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	10:27:32	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	शनि	--

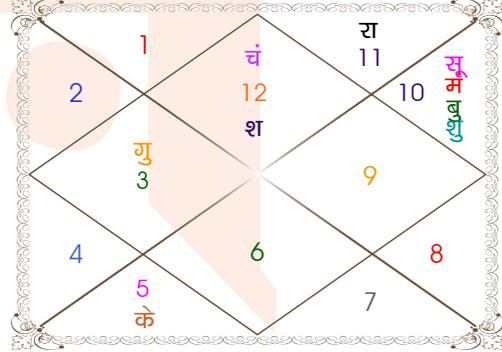
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:23

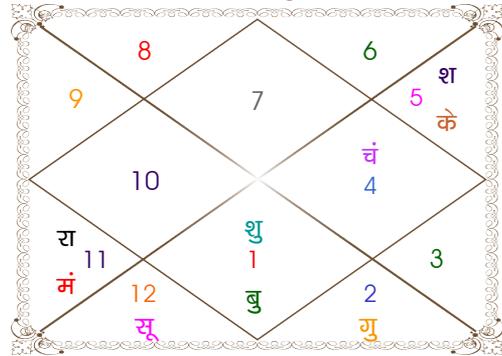
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 27:45:12	मीन 13:12:44
2	मीन 27:45:12	मेष 12:17:40
3	मेष 26:50:08	वृष 11:22:36
4	वृष 25:55:04	मिथुन 10:27:32
5	मिथुन 25:55:04	कर्क 11:22:36
6	कर्क 26:50:08	सिंह 12:17:40
7	सिंह 27:45:12	कन्या 13:12:44
8	कन्या 27:45:12	तुला 12:17:40
9	तुला 26:50:08	वृश्चिक 11:22:36
10	वृश्चिक 25:55:04	धनु 10:27:32
11	धनु 25:55:04	मकर 11:22:36
12	मकर 26:50:08	कुम्भ 12:17:40

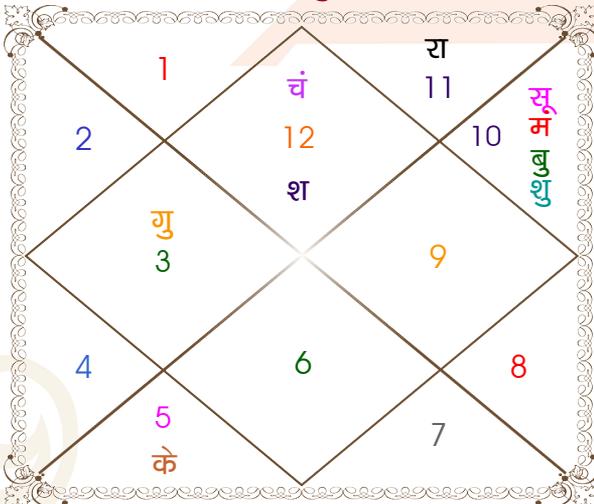
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	13:12:44
2	मेष	19:47:26
3	वृष	17:00:57
4	मिथुन	10:27:32
5	कर्क	04:33:37
6	सिंह	03:53:47
7	कन्या	13:12:44
8	तुला	19:47:26
9	वृश्चिक	17:00:57
10	धनु	10:27:32
11	मकर	04:33:37
12	कुम्भ	03:53:47

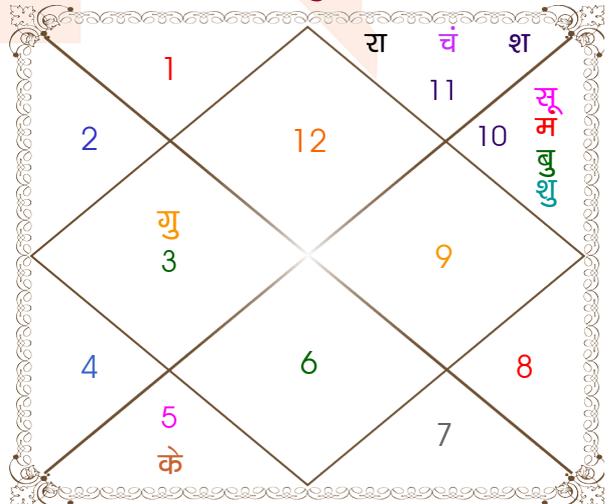
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 2 वर्ष 8 मास 22 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
23/01/2026	15/10/2028	16/10/2047	15/10/2064	16/10/2071
15/10/2028	16/10/2047	15/10/2064	16/10/2071	16/10/2091
00/00/0000	शनि 19/10/2031	बुध 14/03/2050	केतु 13/03/2065	शुक्र 14/02/2075
00/00/0000	बुध 28/06/2034	केतु 11/03/2051	शुक्र 13/05/2066	सूर्य 15/02/2076
00/00/0000	केतु 07/08/2035	शुक्र 09/01/2054	सूर्य 18/09/2066	चंद्र 15/10/2077
00/00/0000	शुक्र 06/10/2038	सूर्य 15/11/2054	चंद्र 19/04/2067	मंगल 15/12/2078
00/00/0000	सूर्य 18/09/2039	चंद्र 15/04/2056	मंगल 15/09/2067	राहु 15/12/2081
00/00/0000	चंद्र 19/04/2041	मंगल 13/04/2057	राहु 03/10/2068	गुरु 15/08/2084
23/01/2026	मंगल 29/05/2042	राहु 31/10/2059	गुरु 09/09/2069	शनि 16/10/2087
मंगल 23/05/2026	राहु 04/04/2045	गुरु 05/02/2062	शनि 19/10/2070	बुध 16/08/2090
राहु 15/10/2028	गुरु 16/10/2047	शनि 15/10/2064	बुध 16/10/2071	केतु 16/10/2091

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
16/10/2091	15/10/2097	17/10/2107	17/10/2114	16/10/2132
15/10/2097	17/10/2107	17/10/2114	16/10/2132	00/00/0000
सूर्य 02/02/2092	चंद्र 16/08/2098	मंगल 14/03/2108	राहु 29/06/2117	गुरु 04/12/2134
चंद्र 03/08/2092	मंगल 17/03/2099	राहु 02/04/2109	गुरु 22/11/2119	शनि 17/06/2137
मंगल 09/12/2092	राहु 16/09/2100	गुरु 08/03/2110	शनि 28/09/2122	बुध 23/09/2139
राहु 03/11/2093	गुरु 16/01/2102	शनि 17/04/2111	बुध 17/04/2125	केतु 28/08/2140
गुरु 22/08/2094	शनि 17/08/2103	बुध 13/04/2112	केतु 05/05/2126	शुक्र 29/04/2143
शनि 04/08/2095	बुध 15/01/2105	केतु 10/09/2112	शुक्र 05/05/2129	सूर्य 16/02/2144
बुध 09/06/2096	केतु 16/08/2105	शुक्र 10/11/2113	सूर्य 30/03/2130	चंद्र 17/06/2145
केतु 15/10/2096	शुक्र 17/04/2107	सूर्य 18/03/2114	चंद्र 29/09/2131	मंगल 24/01/2146
शुक्र 15/10/2097	सूर्य 17/10/2107	चंद्र 17/10/2114	मंगल 16/10/2132	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 2 वर्ष 8 मा 15 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि	शनि - बुध	शनि - केतु
23/01/2026	23/05/2026	15/10/2028	19/10/2031	28/06/2034
23/05/2026	15/10/2028	19/10/2031	28/06/2034	07/08/2035
00/00/0000	राहु 01/10/2026	शनि 07/04/2029	बुध 06/03/2032	केतु 22/07/2034
00/00/0000	गुरु 26/01/2027	बुध 10/09/2029	केतु 03/05/2032	शुक्र 27/09/2034
00/00/0000	शनि 14/06/2027	केतु 13/11/2029	शुक्र 13/10/2032	सूर्य 17/10/2034
00/00/0000	बुध 16/10/2027	शुक्र 15/05/2030	सूर्य 02/12/2032	चंद्र 20/11/2034
23/01/2026	केतु 06/12/2027	सूर्य 09/07/2030	चंद्र 21/02/2033	मंगल 14/12/2034
केतु 09/02/2026	शुक्र 30/04/2028	चंद्र 08/10/2030	मंगल 20/04/2033	राहु 12/02/2035
शुक्र 07/04/2026	सूर्य 13/06/2028	मंगल 12/12/2030	राहु 14/09/2033	गुरु 07/04/2035
सूर्य 24/04/2026	चंद्र 25/08/2028	राहु 25/05/2031	गुरु 23/01/2034	शनि 11/06/2035
चंद्र 23/05/2026	मंगल 15/10/2028	गुरु 19/10/2031	शनि 28/06/2034	बुध 07/08/2035
शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - राहु
07/08/2035	06/10/2038	18/09/2039	19/04/2041	29/05/2042
06/10/2038	18/09/2039	19/04/2041	29/05/2042	04/04/2045
शुक्र 16/02/2036	सूर्य 24/10/2038	चंद्र 06/11/2039	मंगल 12/05/2041	राहु 01/11/2042
सूर्य 13/04/2036	चंद्र 22/11/2038	मंगल 09/12/2039	राहु 12/07/2041	गुरु 20/03/2043
चंद्र 19/07/2036	मंगल 12/12/2038	राहु 05/03/2040	गुरु 04/09/2041	शनि 31/08/2043
मंगल 24/09/2036	राहु 02/02/2039	गुरु 21/05/2040	शनि 07/11/2041	बुध 26/01/2044
राहु 17/03/2037	गुरु 20/03/2039	शनि 21/08/2040	बुध 04/01/2042	केतु 27/03/2044
गुरु 18/08/2037	शनि 14/05/2039	बुध 11/11/2040	केतु 27/01/2042	शुक्र 16/09/2044
शनि 17/02/2038	बुध 02/07/2039	केतु 14/12/2040	शुक्र 05/04/2042	सूर्य 07/11/2044
बुध 31/07/2038	केतु 23/07/2039	शुक्र 21/03/2041	सूर्य 25/04/2042	चंद्र 02/02/2045
केतु 06/10/2038	शुक्र 18/09/2039	सूर्य 19/04/2041	चंद्र 29/05/2042	मंगल 04/04/2045
शनि - गुरु	बुध - बुध	बुध - केतु	बुध - शुक्र	बुध - सूर्य
04/04/2045	16/10/2047	14/03/2050	11/03/2051	09/01/2054
16/10/2047	14/03/2050	11/03/2051	09/01/2054	15/11/2054
गुरु 05/08/2045	बुध 17/02/2048	केतु 04/04/2050	शुक्र 30/08/2051	सूर्य 24/01/2054
शनि 29/12/2045	केतु 09/04/2048	शुक्र 03/06/2050	सूर्य 21/10/2051	चंद्र 19/02/2054
बुध 10/05/2046	शुक्र 02/09/2048	सूर्य 21/06/2050	चंद्र 15/01/2052	मंगल 09/03/2054
केतु 03/07/2046	सूर्य 16/10/2048	चंद्र 21/07/2050	मंगल 16/03/2052	राहु 25/04/2054
शुक्र 04/12/2046	चंद्र 29/12/2048	मंगल 11/08/2050	राहु 18/08/2052	गुरु 05/06/2054
सूर्य 19/01/2047	मंगल 18/02/2049	राहु 05/10/2050	गुरु 03/01/2053	शनि 24/07/2054
चंद्र 06/04/2047	राहु 30/06/2049	गुरु 22/11/2050	शनि 16/06/2053	बुध 06/09/2054
मंगल 30/05/2047	गुरु 25/10/2049	शनि 18/01/2051	बुध 09/11/2053	केतु 24/09/2054
राहु 16/10/2047	शनि 14/03/2050	बुध 11/03/2051	केतु 09/01/2054	शुक्र 15/11/2054

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

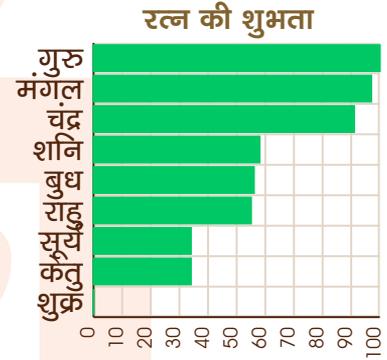
मूलांक	5
भाग्यांक	7
मित्र अंक	3, 5, 9, 7
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	97%	धनार्जन, धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	91%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
नीलम	शनि	58%	स्वास्थ्य, धनार्जन, कम खर्च
पन्ना	बुध	56%	धनार्जन, सुख, दम्पति
गोमेद	राहु	55%	कम खर्च, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	34%	हानि, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	34%	शत्रु व रोग, हानि
हीरा	शुक्र	0%	हानि, पराक्रम हानि, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	15/10/2028	47%	97%	100%	38%	100%	0%	58%	55%	34%
शनि	16/10/2047	9%	78%	84%	62%	100%	9%	70%	61%	9%
बुध	15/10/2064	47%	78%	97%	69%	100%	9%	58%	55%	34%
केतु	16/10/2071	9%	78%	100%	56%	100%	9%	41%	34%	55%
शुक्र	16/10/2091	9%	78%	97%	62%	100%	22%	64%	61%	47%
सूर्य	15/10/2097	55%	97%	100%	56%	100%	0%	41%	34%	9%
चंद्र	17/10/2107	47%	100%	97%	62%	100%	0%	58%	34%	9%
मंगल	17/10/2114	47%	97%	100%	38%	100%	0%	58%	34%	47%
राहु	16/10/2132	9%	78%	84%	56%	100%	9%	64%	67%	9%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	23/01/2026-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----

### द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----

### तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090 21/05/2091-02/07/2093	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/12/2099-17/03/2100 16/09/2100-03/12/2102	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/02/2111-02/05/2113 22/09/2113-26/01/2114	-----

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया  
साढ़ेसाती तृतीय ढैया  
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया  
अष्टम स्थानस्थ ढैया  
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

#### फल

सम  
अशुभ  
सम  
सम  
सम

#### क्षेत्र

स्वास्थ्य  
धन  
सुख  
दुर्घटना से बचाव  
कम खर्च

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके क्रय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

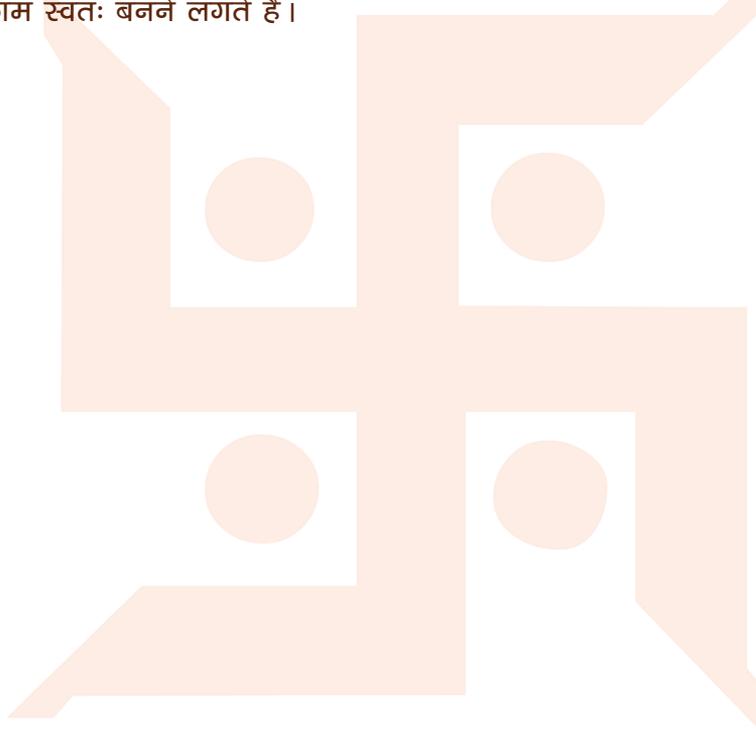
आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को

प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



## ग्रह फल

### सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

## मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

## बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

## गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

## शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्यरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

## राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

## केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु  
( 23/01/2026 - 15/10/2028 )

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 23/01/2026 को आरम्भ और 15/10/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है और मातृभूमि, माता, निजी मामले, गुप्त जीवन, खेती, बगान पैतृक सम्पत्ति, शिक्षा-वृत्ति, जल, तालाब, दूध, नदी और झील के द्योतक इस भाव को बली कर रहा है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है। चौथे भाव में स्थित इस ग्रह की आपकी जन्मकुण्डली के आठवें, दसवें और बारहवें भावों पर दृष्टि है और यह इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए अनुकूल, सुख तथा समृद्धिदायक होगी।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु चतुर्थ भाव को बली कर रहा है। आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा और कोई गम्भीर बीमारी या कष्ट नहीं होगा। आप अपना कार्य सामान्य ढंग से पूरा करेंगे।

धन-सम्पत्ति :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (बारहवें भाव के अतिरिक्त) आठवें और 'मंगलीय कार्य' तथा व्यवसाय के दसवें भाव पर है। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति में वृद्धि करने के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। आप नयी गाड़ियाँ तथा नया मकान खरीद सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

व्यवसाय :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (12वें भाव के अतिरिक्त) 8वें तथा व्यवसाय, दीर्घायु और 'सुखकार्य' के 10वें भाव पर है, अतः आप अपने व्यवसाय में सफल होंगे, कार्यक्षेत्र में आगे रहेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, आपको अपनी व्यावसायिक वृत्ति में प्रगति के अच्छे अवसर मिलेंगे। आपके कार्य की आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चतुर्थ भाव अर्थात् माता, जन्म और 'सुखस्थान' के भाव में स्थित गुरु के कारण इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण रहेगा। परिवार में समरसता लाने में आपकी माता की भूमिका अहम होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

साहित्य तथा पुराणों में रुचि के कारण आप इनके अध्ययन पर अधिक समय देंगे।

**अंतर्दशा :- गुरु - मंगल  
( 23/01/2026 - 23/05/2026 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 23/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 23/01/2026 को प्रारंभ होकर वद 23/05/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और सफल होंगे। प्रभाव में वृद्धि होगी। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे। लक्ष्य की ओर उन्मुख रहेंगे। कार्यों की प्रशंसा होगी। निवेश से लाभ होगा।

साहस और उत्साह में वृद्धि होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। शिशु का जन्म हो सकता है। शिक्षा, विशेषकर तकनीकी क्षेत्र की, उत्तम रहेगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मातहत सहयोग करेंगे।

आपके जीवनसाथी को निवेश और व्यापार में लाभ होगा। आपके पिता को उच्चपद प्राप्त हो सकता है। माता को जीवन में नया वातावरण आएगा। आपके भाई-बहनों के लिए ज्ञान-विज्ञान से संबंधित सर्जनात्मक कार्य, साहस और खुशी का संकेत है।

आपकी संतान को वांछित कार्यों में सफलता मिलेगी; सामूहिक कार्यों से खुशी मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, स्पर्धा में सफल होंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए तंदूर में बनी मीठी रोटी बांटे।

**अंतर्दशा :- गुरु - राहु  
( 23/05/2026 - 15/10/2028 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 23/01/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 23/05/2026 को प्रारंभ होकर 15/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं; धनसंचय में बाधा आ सकती है। प्रगति में निराशा हो सकती है। नये मित्र बन सकते हैं। विदेश की यात्रा या वहां पर निवास संभव है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। मुकदमे में जीत हो सकती है। कार्यालय सुविधासंपन्न होगा। किरायेदार सहायता करेंगे। पालतू जानवरों से खुशी मिल सकती है। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम होने के कारण सब बाधाओं को पार कर लेंगे।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा। आपके पिता को अचल संपत्ति प्राप्त

**महादशा :- शनि  
( 15/10/2028 - 16/10/2047 )**

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 15/10/2028 को आरम्भ और 16/10/2047 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रथम भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो जातक के दिमाग में भय उत्पन्न करता है। लक्ष्य प्राप्ति में यह बाधा और विलम्ब करता है। यह जातक की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि तृतीय, सप्तम तथा दशम भाव पर है और यह इन भावों के 'कारकत्व' पर प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शरीर की लम्बाई, बनावट, स्वास्थ्य, जीवन-शक्ति, व्यक्तित्व, जीवन संघर्ष, प्रतिष्ठा, सामान्य तन्दुरुस्ती, और जीवन-संरचना के प्रति विचार का द्योतक है।

**स्वास्थ्य :**

महादशा स्वामी शनि लग्न में स्थित होने के फलस्वरूप इस दशा के दौरान कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना नहीं होगी। इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा और आप अपना कार्य नियमित रूप से करेंगे।

**अर्थ-सम्पत्ति :**

इस दशा के दौरान शनि के कारण आपको अर्थ-सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आपको धन अर्जन के अनेक अवसर मिलेंगे और इस दशा में आपके संसाधनों में वृद्धि और 'सुधार' होगा। आप आराम और विलास की वस्तुओं पर व्यय करने में सक्षम होंगे।

**व्यवसाय :**

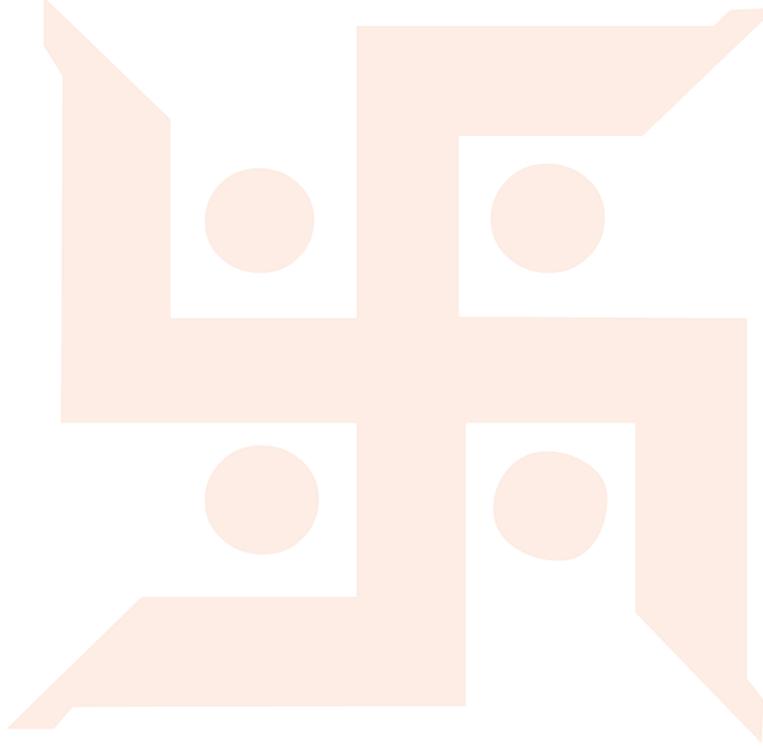
व्यावसायिक स्तर पर आप सुदृढ़ होंगे और अपनी बुद्धिमत्ता तथा शिक्षा के बल पर स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपमें स्वनियोजित होने की संभावना है। आप उपदेशक या नेता भी हो सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति भी मिल सकती है।

पारिवारिक जीवन :

प्रथम भाव से सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप आपको आपके जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा और वह आपके परिवार को सुचारु रूप से चलाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी तथा सहयोगी होंगे और आपके दैनिक जीवन में आपका सहयोग करेंगे। आपको उनसे संतोष मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा और साहित्यिक वृत्ति में वृद्धि की दृष्टि से यह दशा आपके अनुकूल होगी।



**अंतर्दशा :- शनि - शनि  
( 15/10/2028 - 19/10/2031 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/10/2028 को प्रारंभ होकर 16/10/2047 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 15/10/2028 को प्रारंभ होकर 19/10/2031 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3, 7, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति में गिरावट आ सकती है। वातरोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अधिकारीगण अप्रसन्न रह सकते हैं। आलस्य की भावना अधिक हो सकती है; जिम्मेदारियों से बचने की कोशिश कर सकते हैं। कार्यों में प्रगति धीमी रहेगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें:

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।